Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 3 | SPECIAL ISSUE MARCH-2023

गंगानगर जिले में बढ़ते नगरीकरण का भौगोलिक अध्ययन

नवदीप संधू	शोधार्थी, भूगोल विभाग, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान)
डॉ. राजेंद्र कुमार	सह–आचार्य, भूगोल विभाग, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

ABSTRACT:

नगरीकरण नगरीय क्षेत्रों का भौतिक विकास है, जो नगरो को विकास, जनसंख्या वृद्धि, निर्मित क्षेत्र में वृद्धि, जनसंख्या का उच्च घनत्व आर शहरी जीवन शैली के मनोवैज्ञानिक चरण की ओर ले जाता है। नगरीकरण प्रवास का एक कारण और प्रभाव है। बेहतर शैक्षिक अवसर, नौकरी के अवसर, स्वास्थय सुविधाएँ और उच्च जीवनस्तर नगरीकरण की बढती प्रवृति मे योगदान देते है। 21वीं सदी में विश्व के अधिकांश देशो में ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर जनसंख्या का तेजी से पलायन देखा गया। 1900 मे विश्व की मात्र 13 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या थी, जो 2011 मे बढकर 52 प्रतिशत हो गई। हालाँकि, विकसित और विकासशील देशो के बीच नगरीकरण का पैटन बहुत असमान देखा गया है। विकसित देशों मे जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा विकासशील देशों की तुलना मे नगरीय क्षेत्रों मे रहता है। दूसरी ओर, विकासशील देशो की अधिकांश नगरीय आबादी एशियाई और अफ्रीकी देशो मे केन्द्रित है। ऐतिहासिक रुप से, पश्चिमी दुनिया मे औद्योगिक क्रान्ति के मद्देनजर नगरीकरण की प्रक्रिया तेज हो गई, जिससे संचार और परिवहन जैसी बुनियादी सुविधाओं का विस्तार हुआ, जिसने ग्रामीण से नगरीय क्षेत्र में प्रवास को बढाया। नगरीकरण विकास का प्रतीक है, यदि किसी क्षेत्र में नगरीकरण की गति तीव्र है तो इस आधार पर वहाँ के विकास का अनुमान लगाया जा सकता है। नगरोकरण एक वैषिक प्रक्रिया है जो ना केवल नगरीय क्षेत्रों मे जनसंख्या घनत्व मे वृद्धि कर देती है वरन् ग्रामीण क्षेत्रों मे जनसंख्या कम होने का प्रमुख कारण भी है। नगरीकरण की प्रवृति के फलस्वरूप शहरी क्षेत्रो में औधोगिकीकरण का भी केन्द्रीकरण हो रहा है जिसक फलस्वरूप अनेक पर्यावरणीय समस्या उत्पन्न हो रही है। प्रस्तुत शोध पत्र मे गंगानगर जिले में बढ़ते नगरीकरण के स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है साथ ही जिले में नगरीकरण के बढ़ने से उत्पन्न विभिन्न प्रभावों एवं इसके प्रमुख कारणों का भी विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

KEYWORDS:

औधोगिकीकरण, नगरीकरण, वैश्विक प्रक्रिया, जनसंख्या वृद्धि

परिचयः

नगरीकरण को शहरीकरण के नाम से भी जाना जाता है तथा नगरीकरण को वर्तमान समय मे एक वैश्विक प्रक्रिया के रूप मे देखा जाता है। नगरीकरण की दर क्षेत्र विशेष की भौगोलिक स्थिति पर भी निर्भर करती है, यदि किसी क्षेत्र में भौगोलिक दशाऐं अनुकूल नहीं होगी तो निश्चित ही वहाँ नगरीकरण की प्रक्रिया धीमी अथवा शून्य होगी। वस्तुतः नगरीकरण विकास का प्रतीक है, यदि किसी क्षेत्र में नगरीकरण की गति तीव्र है तो इस आधार पर वहाँ के विकास का अनुमान लगाया जा सकता है। नगरीकरण एक वैश्विक प्रक्रिया है जो ना केवल नगरीय क्षेत्रों मे जनसंख्या घनत्व मे वृद्धि कर देती है वरन् ग्रामीण क्षेत्रों मे जनसंख्या कम होने का प्रमुख कारण भी है। नगरीकरण की दर क्षेत्र विशेष की भौगोलिक स्थिति पर भी निर्भर करती है, यदि किसी क्षेत्र में भौगोलिक दशाऐं अनुकूल नहीं होगी तो निश्चित ही वहाँ नगरीकरण की प्रक्रिया धीमी अथवा शून्य होगी। नगरीकरण की प्रवृति के फलस्वरूप शहरी क्षेत्रो में औधोगिकीकरण का भी केन्द्रीकरण हो रहा है जिसके फलस्वरूप अनेक पर्यावरणीय समस्याऐं उत्पन्न हो रही है। वर्तमान समय मे नगरीकरण को विकास का द्योतक माना जाता है, बढ़ती जनसंख्या के अनुपात मे रोजगारों का सृजन नहीं हो पाना नगरीकरण को प्रेरित करता है। रोजगार की तलाश मे जनसमुदाय ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की तरफ प्रवास करता है। ग्रामीण क्षेत्रों मे धीरे धीरे शून्य जनसंख्या की स्थिति उत्पन्न होना तथा नगरोय क्षेत्रों मे जनसंख्या घनत्व बढ़ने के फलस्वरूप आवास इत्यादि की समस्या का बढ़ना आदि को वर्तमान समय मे नगरीकरण के दुष्परिणामों के रूप मे देखा जा सकता है। यद्यपी नगरीकरण के फलस्वरूप क्षेत्र के जनसंख्या घनत्व में वृद्धि होती है, परन्तु इस संदर्भ मे दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है की केवल जनसंख्या घनत्व मे वृद्धि होना मात्र ही नगरीकरण का परिचायक नहीं है। वस्तुतः ऐसे बहुत से कारक है जो नगरीकरण की प्रवृति को प्रभावित करते है जिनमे उपयुक्त जलवायु का होना, आवागमन के साधनों का विकास, व्यापार करने की प्रवृति मे वृद्धि, नगरीय सुविधाओ का आकर्षण आदि प्रमुख है। इसके साथ ही एक अन्य महत्वपूर्ण कारण यह भी कहा जा सकता है की नगर राजनैतिक गतिविधियों के सशक्त केंद्र होते है जो की इनके विकास को बड़े पैमाने पर प्रेरित करता है। गंगानगर जिला जो की राजस्थान राज्य का एक महत्वपूर्ण जिला है यह जिला भी नगरीकरण की प्रक्रिया से अछूता नहीं है। जिले में नगरीकरण के स्तर का मूल्यांकन इस आधार पर किया जा सकता है की यहाँ के प्रमुख नगरीय केन्द्रों मे जनसंख्या का घनत्व निरंतर बढ़ रहा है।

अध्ययन क्षेत्र रू

राजस्थान के उत्तरी छोर पर स्थित गंगानगर जिला भौतिक दृष्टि से राज्य के पश्चिमी शुष्क रेतीला मैदान में स्थित है। गंगानगर की स्थापना सन 1910 में बीकानेर के महाराज गंगासिंह के द्वारा की गई थी। इसको प्राचीन समय मे राम नगर के नाम से जाना जाता है। लेकिन 1927 में गंगासिंह ने गंगनहर के निर्माण के समय गंगासिंह ने रामनगर का नाम बदलकर गंगानगर कर दिया। गंगानगर जिला 28^0 4′ से 30^0 6′ उत्तरी अक्षांश तथा 72^0 2′ से 75^0 3′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले की उत्तरी सीमा फाजिल्का (पंजाब), पूर्वी सीमा हनुमानगढ (राजस्थान), दक्षिणी सीमा बहावलपुर (पाकिस्तानी पंजाब) द्वारा सीमांकित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 11,154,66 वर्ग किमी. है जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 3.26 प्रतिशत है। गंगानगर जिला प्रशासनिक दृष्टि से 8 तहसीलो तथा 2 उपतहसीलों यथा गंगानगर , श्रीकरणपुर, पदमपुर, रायसिंहनगर, सूरतगढ़, विजयनगर, अनुपगढ़ एवं सादुलशहर तथा घड़साना, बींझबायला में बंटा हुआ है। गंगानगर जिले में कुल 344 ग्राम पंचायते और 3061 गाँव है, जो राजस्थान मे सबसे ज्यादा है। 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या की दृष्टि से भारत के 640 जिलो में गंगानगर का 235 वां स्थान है और जिले का जनसंख्या घन्तव 179 व्यक्ति प्रति किलोमोटर है। जिले में ग्रामीण जनसंख्या 1,433,858 व्यक्ति तथा नगरीय जनसंख्या 535,662 व्यक्ति है। जिले की साक्षरता दर 70.25 प्रतिशत है।

अध्ययन के उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्न है–

- जिले में नगरीकरण के स्तर का आंकलन करना
- जिले में नगरीकरण की प्रवृति का विश्लेषण करना
- नगरीकरण हेतु उत्तरदाई विभिन्न कारणों का विश्लेषण करना

आंकड़ों के स्रोतः

प्रस्तुत शोध पत्र मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर तैयार किया गया है, इस हेतु आंकड़ों का संकलन विभिन्न प्रकार के रेपोर्ट्स यथा जिला सांख्यिकी रूपरेखा, श्रीगंगानगर, जिला गजेटियर, श्रीगंगानगर आदि से किया गया है, साथ ही नवीन आंकड़ों के संकलन हेतु विभिन्न प्रकार के ऑनलाइन स्रोतों से भी सहायता ली गयी है।

महत्वपूर्ण साहित्यों की समीक्षाः

1. **लोकेश त्रिपाठी, सुनील कुमार (2019),** ने अपने शोध पत्र श्बिंदहमे पद संदक `नतबिम जमउचमतंजनतम कनम जव पदकनेजतपंसप्रंजपवद नतइंदप्रंजपवद नेपदह हमव.चंजपंस जमबीदवसवहपमे रू । बेंम`जनकल वइीपसूंतं ए त्रेंजींदश मे नगरीकरण व औद्योगीकरण के तापमान परिवर्तन पर प्रभाव का अध्ययन किया है। भीलवाडा एक कपड़ा उद्योग आधारित शहर है जहाँ उद्ययोगीकरण और नगरीकरण हुआ है और धीरे–धीरे विकसित हुआ है। अध्ययन का अद्देश्य शहर के औद्योगिकरण और नगरीकरण के कारण भूमि की सतह के तापमान मे परिवर्तन को ट्रैंक करना

है। क्षेत्र का औसत तापमान 1999 में 31.17° से. ग्रे. था जो 2009 में 34.46° से. ग्रे. और 2018 में 32.29° से. ग्रे. हो गया । 1999–2009 की समय अवधि के दौरान तापमान अत्यधिक (3.29° से. ग्रे.) बढ़ गया। हालांकि, 2009–2019 की समयावधि में, हम देख सकते हैं कि तापमान में 2.17° से. ग्रे. की गिरावट आई है। अध्ययन से पता चलता है कि आद्योगीकरण व नगरीकरण भूमि की सतह के तापमान को कैसे नियंत्रित करते है।

2. **गीतिका चुघ (2019),** ने अपने शोध पत्र श्न्तइंदप्रंजपवद पद ळंदहंदंहंत रू ज्तमदके दक चंजजमतदेश में गंगानगर के नगरीकरण का अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस पेपर का उद्देश्य राजस्थान के गंगानगर जिले में नगरीकरण प्रक्रिया और प्रवृति और उसके प्रभाव का अध्ययन करना है। यह गंगानगर के तहसीलों के नगरीकरण स्तर का भी अध्ययन करता है। यह गाँव रामनगर से गंगानगर टाउन के उद्भव का पता लगाता है जो सबसे पुरानी सभ्यता के स्थल में से एक है। जनसंख्या डेटा भारत की 1991, 2001 और 2011 की जनगणना से लिया गया है। नगरीकरण, प्रवृतियों और प्रक्रियाओं पर प्रांसगिक रिपोर्टो और उपलब्ध साहित्य से भी जानकारी प्राप्त की जाती है। नगरीकरण की प्रवृति को दर्शाने के लिए रेखांकन और उपकरणों का उपयोग किया जाता है। बढ़ती हुई जनसंख्या के विभिन्न कारणों की जांच की गई है और बुनियादी ढांचे और नागरिक सुविधाओं पर उनके प्रभाव की जांच की गई है।

3. **आर. चेतन वर्मा, जितेन्द्र सिंह, आलोक रंजन (2020),** श्थ्नजनतम नतइंदप्रंजपवद नेपदह बसमंद मदमतहल हमदमतंजपवद चसंदजेश्ण यह पेपर ऐसे विकल्पों के बारे में है जो नवीनकरणीय स्त्रोतों का उपयोग करके किफायती और पोर्टेबल तरीकों से स्वच्छ ऊर्जा उत्पन्न करता है ताकि एक बस्ती की ऊर्जा मांगो की भरपाई की जा सके और उन्हें पोर्टेबल तरीके से बुनियादी शहरी सुविधाएं प्रदान की जा सकें। जलवायु और पर्यावरणीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हमें ऊर्जा उत्पादन के लिए स्वच्छ ईंधन के इस दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, यह दृष्टिकोण हरित शहरीकरण के लिए समाधान प्रदान करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों और कई तकनीकी उपकरणों पर निर्भर करता है।

जिले में नगरीकरण का स्तरः

गंगानगर जिले में पिछले 25 वर्षो के आंकड़ो को देखें तो जिले में नगरीकरण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इस समयावधि मे जिले की जनसंख्या में विशेषकर नगरीय जनसंख्या में रिकॉर्ड वृद्धि हुई है। वर्ष 2001 एवं 2011 के जनसंख्या के आंकड़ो का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है की जिले के नगरीय क्षेत्रों मे कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत वर्ष 2001 की तुलना मे वर्ष 2011 मे काफी बढ़ा है। उदाहरण के तौर पर जिले के घड़साना नगर मे वर्ष 2001 मे नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 6.21 था जो वर्ष 2011 मे 17.45 हो गया। एवं संभावना है की वर्ष 2021 के जनगणना के आंकड़ो मे यह प्रतिशत और अधिक बढ़ेगा। वस्तुतः यही स्थिति जिले के अन्य नगरों के संदर्भ मे भी पायी गयी है। बढ़ते नगरीय विस्तार के कारण इन नगरीय केन्द्रों की आकारिकी मे भी व्यापक परिवर्तन हो रहे है, जो जिले के विकास को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही तरह से प्रभावित कर रहे है।

जिले में नगरीकरण की प्रवृतिः

गंगानगर जिले की अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि आधारित रही है, एवं नहरी तंत्र के आगमन के पश्चात क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओ के विस्तार के फलस्वरूप जिले की अर्थव्यवस्था मे उतरोत्तर वृद्धि हुई है, परन्तु सूक्ष्मता से आंकलन करने पर ज्ञात होता है, जिले के प्रमुख नगरीय केन्द्रो मे नगरीकरण की प्रक्रिया बढने का प्रमुख उत्तरदायी कारक भी यही रहा है। जिले के छोटे–छोटे कस्बे जिनकी चारों तरफ की भौगोलिक दशाऐं नगरीय विस्तार के अनूकूल थी, आधारभूत सुविधाओं के बढने से इनमे नगरीकरण की प्रवृति तेज हुई है। वर्तमान समय मे जिले में ऐसे छोटे–बड़े कई नगरीय केंद्र देखें जा सकते है जिनमे प्रत्येक जनगणना वर्ष मे नगरीय विस्तार तेज गति से हुआ है। गंगानगर जिले में नगरीकरण की प्रवृति को देखें तो आंकड़ो से ज्ञात होता है की वर्ष 2001 मे जिले में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 25.33 था, जो वर्ष 2011 मे बढ़कर 27.19 प्रतिशत पाया गया, इस प्रकार जिले में नगरीय जनसंख्या में 1.86 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई, जबकि राजस्थान राज्य मे इस दशक मे यह वृद्धि दर 1.49 प्रतिशत रही। अर्थात गंगानगर जिले में नगरीकरण की वृद्धि राज्य के प्रतिशत से भी अधिक पायी गयी है, एवं संभावना है कि नवीन जनगणना के आंकडों में यह वृद्धि और तीव्र पायी जाएगी।

बढ़ती नगरीकरण की प्रवृति के कारण जिले में विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्याऐं उत्पन्न हो गयी है, जिनमे जल, ध्वनि एवं वायु प्रदूषण तो प्रमुख है ही, इसके अलावा जिले में विभिन्न प्रकार के अपशिष्टों के निस्तारण की समस्या भी विकराल होती जा रही है, जिस कारण जिले के बाहरी क्षेत्रों मे मलीन बस्तियों का विकास भी होने लगा है। जिले में बढ़ती इन समस्याओ का प्रत्यक्ष प्रभाव जिले के जनसमुदाय पर पड़ रहा है, जिससे जिले में जीवन स्तर निम्न होने की संभावना है। बढ़ते नगरीकरण का प्रभाव जिले में कृषि क्षेत्र में भी पड़ा है। जिले में औद्योगिक विकास के कारण कृषि भूमि का क्षेत्रफल भी कम हुआ है, जिससे जिले का कृषि विकास प्रभावित हो रहा है। जिले में आजीविका के प्रमुख साधन कृषि व उस पर आधारित उद्योग है परन्तु निरन्तर औद्योगिक विकास ने इस जिले में नगरीकरण को बढ़ावा दिया है।

निष्कर्षः

उपरोक्त अध्ययन के पश्चात निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है की गंगानगर जिले मे पिछले कुछ दशकों से नगरीकरण की प्रवृति मे वृद्धि देखने को मिलती है, जिले मे वर्ष 1981 से 2011 के दशकों में नगरीकरण की प्रवृति तीव्र गति से बढ़ी है तथा जिले के प्रमुख नगरीय क्षेत्रों मे नगरीकरण का विस्तार निरंतर हो रहा है, जिस कारण जिले की नगरीय आकारिकी मे भी परिवर्तन हो रहा है। जिले मे नगरीकरण के प्रवृति के बढ़ने से उद्योगों का भी निरंतर विस्तार हुआ है जिसका स्पष्ट प्रभाव कृषि भूमि पर देखने को मिलता है। साथ ही नगरीकरण की बढ़ती प्रवृति के कारण जिले मे विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों यथा जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण एवं कचरा निस्तारण की समस्यायें उत्पन्न हुई है, साथ ही नगरीय जनसंख्या में वृद्धि से जिले में मलीन बस्तियों का विकास भी हो रहा है। अतः वर्तमान समय मे जिले मे बढ़ते नगरीकरण की दर को नियंत्रित करने तथा जिले के सुनियोजित विकास हेतु कठोर सरकारी एव प्रशासनिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है ताकि भविष्य मे यह समस्या विकराल रूप ना ले सके।

REFERENCES

1. Chouhan, B. P., & Kannan, M., (2019). Impacts of Urbanization on Land Use Pattern and Environment: A Case Study of Ajmer City, Rajasthan. *Asian Review of Social Sciences, 8*(1), 87-91, ISSN: 2249-6319.

2. Chugh, G., (2019). Urbanization in Ganganagar: Trends and Patterns, *International Journal of Research and Analytical Reviews, 6*(1), 182y-184y, ISSN: 2348-1269, PRINT ISSN: 2349-5138.

3. Kumar, M., Sharif, M. & Ahmed, S., (2020). Impact of urbanization on the river Yamuna basin, *International Journal of River Basin Management, 18*(4), 461-475, DOI: 10.1080/15715124.2019.1613412

4. Mathew, A., Chaudhary, R., Gupta, N., Khandelwal, S., & Kaul, N. (2015). Study of urban heat island effect on Ahmedabad City and its relationship with urbanization and vegetation parameters. *Int. J. Comput. Math. Sci*, *4*, 126-135, ISSN: 2347-8527.

5. Sadashivam, T., & Tabassu, S. (2016). Trends of urbanization in India: issues and challenges in the 21st century. *International Journal of Information Research and Review*, *3*(5), 2375-2384.

6. Tripathi, L., & Kumar, S. (2019). Changes in Land Surface Temperature due to Industrialization & Urbanization using geo-spatial technologies-A case study of Bhilwara city, Rajasthan. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, 6*(5), 2387-2394, ISSN: 2349-5162.

7. Verma, A. C., Singh, J., & Ranjan, A., (2020). Future Urbanization Using Clean Energy Generation Plants, *International Journal of Scientific and Technology Research, 9*(2), 2972-2975, ISSN: 2277-8616.